चूलियाए गदियागदियाए मणुस्साणं गदीओ

देवेसु गच्छंता भवणवासियप्पहुडि जाव णवगेवज्जविमाण-वासियदेवेसु गच्छंति ।। १६१ ।।

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि कधं मणुससासणसम्माइटठीणं सम्मत्तसंजम-रहियाणं णवगेवज्जेसु उप्पत्ती ? ण एस दोसो, दव्वसंजमस्स वि तप्फलत्तुवलंभादो (१ मनुष्याः संख्येयवर्षायुषः मिथ्यादर्शनाः सासादनसम्यग्दर्शनात्र्च भवनवासिप्रभृतिषूपरिमग्रैवेयकान्तेषु उपपादमास्कंदंति त.रा.४,२१, धृत्वा निर्ग्रथलिंग ये प्रकृष्ठं कुर्वते तपः अनत्यग्रैवेयकं यावदभव्याः खलुयान्ति ते तत्त्वार्थसार २,१६७.त्तुवलंभ्भ ता.२)

मणुसा सम्मामिच्छाइटठी संखेज्जवासाउआ सम्माच्छित्तगुणेण मणुसा मणुसेहि णो कालं करेंति ।। १६२ ।।

कुदो ? एदस्स सव्वाउआणं बंधाभावादो

मणुससम्माइटठी संखेज्जवासाउआ मणुस्सा मणुस्सेहि कालगद-समाणा कदि गदीओ गच्छति ? ।। १६३ ।।

सुगममेदं

देवोंमें जानेवाले उपर्युक्त मनुष्य भवनवासी देवोंसे लगाकर नौ ग्रैवेयकविमान-वासो देवों तक जाते हैं ।। १६१ ।।

ये सूत्र सुगम हैं

शंका-सम्यक्त्व और संयमसे रहित सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंकी नौ ग्रैवेयकोंमें उत्पत्ति किस प्रकार होती है?

समाधान-यह कोई दोष नहीं, क्योंकि द्रव्यसंयमके भी नौ ग्रैवेयकोंमें उत्पन्न होने रुप फलकी प्राप्ति पाई जाती है

संख्यात वर्षकी आयुवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्यातव गुणस्थान सहित मनुष्य होते हुए मनुष्यपर्यायोंसे मरण नहीं करते ।। १६२ ।।

क्योंकि, सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानमें सर्व आयुओंकेबन्धका अभाव है

मनुष्य सम्यग्दृष्टि संख्यातवर्षायुष्क मनुष्य मनुष्यपर्यायोंसे मरण कर कितनी गतियोंमें जाते हैं ? ।। १६३ ।।

यह सूत्र सुगम है

छक्खंडागमे जीवटठाणं

एक्कं हि चेव देवगदिं गच्छंति (१ एगंतपंडिए णं भंते, मणुस्से किं नेर० पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उवव०? गोयमा, एगंतपंडिए णं मणुस्से आउयं सिय पकरेइ, सिय नो पकरेइ जइ पकरेइ नो नेरइया० पकरेइ, नो तिरि०, नो मणु०, देवाउयं पकरेइ xxx बालपंडिए णं भंते, मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ? गोयमा, नो नेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ, से केणटठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ? गोयमा, बालपंडिए णं मणुसे तहारुवस्स समणस्स वा माहणस्स वां अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म देसं उवरमइ, देसं नो उवरमइ, देसं पच्चक्खाइ, देसं णो पच्चक्खाइ से तेणटठेणं देसोवरमदेसपच्चक्खाणेणं नो नेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ से तेणटठेणं जाव देवेसु उववज्जइ व्याख्याप्रज्ञप्ति १,८,६५.) ll १६४ ll

एत्थं चत्तारि गदीओ गच्छंति त्ति वत्तव्वं, मणुससम्माइटठीणं चउग्गइगमणुव-लंभादो तं जहा-देवगदिं ताव मणुससम्माइटिठणो गच्छंति चेव, एत्थेव सुत्ते उत्त-त्तादो णिरयगदिं पि गच्छंति, णेरइया सम्मत्तेण अधिगदा णियमा सम्मत्तेण चेव णींति त्ति सुत्तंवयणादो ण तिरिक्खसम्माइटिठणो णिरयगदिमधिगच्छंति, तत्थ दंसणमोहणीयस्स खवणभावादो खइयसम्मत्ताभावा तत्थतणवेदगसम्माइटिठणो णिरय-गदिमधिगच्छंति, तेसिं मरणकाले णिरयाउअसंतस्साभावादो ण देव-णेरइयसम्माइटिठणो णिरयगदिमधिगच्छंति, जिणाणाभावादो तम्हा परिसेसादो सम्मादिटिठणो (१(पि गच्छंति),सम्मत्तेण मु.)मणुसा चेव णिरयगदिमधिगच्छंति त्ति सिध्दं तिरिक्खगदिं पि गच्छंति, कुदो ? तिरिकखगदि सम्मत्तेण

संख्यातवर्षायुष्क सम्यग्दृष्टि मनुष्य एकमात्र देवगतिको हो जाते हैं ll १६४ ll

शंका--यहांपर संख्यातवर्षायुष्क सम्यग्दृष्टि मनुष्य चारों गतियोंको जाते है, ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि सम्यग्दृष्टि मनुष्योंका चारों गतियोंमें गमन पाया जाता हैं वह इस प्रकार है --सम्यग्दृष्टि मनुष्य देवगतिको तो जाते ही हैं, क्योंकि यह बात प्रस्तुत सूत्रमें ही कही गई है और सम्यग्दृष्टि मनुष्य नरकगतिको भी जाते हैं, क्योंकि नारकी सम्यक्त्वसे नरकमें प्रवेश करके नियमसे सम्यक्त्व सहित ही वहांसे निकलते हैं, ऐसा सुत्रका वचन है तिर्यच सम्यग्दृष्टि जीव तो नरकगतिको जाते नहीं हैं, क्योंकि उनमें दर्शनमोहनीयके क्षपणका अभाव होनेसे क्षायिक

सम्यक्त्वका अभाव है और न तिर्यचगतिसंबंधी वेदकसम्यग्दृष्टि नरकगतिको जाते हैं, क्योंकि उनके मरण-कालमें नरकायु कर्मकी सत्ताका अभाव होता है देव और नारकी सम्यग्दृष्टि नरक-गतिको जाते नहीं हैं, क्योंकि ऐसा जिन भगवानका उपदेश नहीं है इसलिये पारिशेष न्यायसे सम्यग्दृष्टि मनुष्य ही नरकगतिको जाते हैं यह बात सिध्द हुई सम्यग्दृष्टि, मनुष्य तिर्यचगतिको भी जाते हैं, क्योंकि तिर्यचगतिको सम्यक्त्व सहित जानेवाले

चूलियाए गदियागदियाए मणुस्साणं गदीओ

अधिगदा णियमा सम्मत्तेण चेव णींति त्ति जिणाणादो एत्थ ण देव-णेरइय-तिरिक्ख-सम्माइटिठणो उपज्जंति, एदेसिमेत्थुप्पत्तीए पदुप्पायणजिणाभावादो तम्हा तिरिक्खेसु सम्माइटिठणो मणुस्सा चेव (१ मणुस्सोव ता.१, मणुस्सेव मु.) उप्पजंति एवं मणुस्सेसु मणुससम्माइटठीणं उप्पत्ती साहे-दव्वा त्ति ?

एत्थ परिहारो उच्चदे तं जहा - जेहि मिच्छाइटठीहि देवाउअं मोत्तूण अण्ण-माउअं बंधिय पच्छा सम्मत्तं गहियं ते एत्थ ण परिगहिया तेण एक्कं चेव देवगदिं गच्छंति मणुससम्माइटिठणो त्ति भणिदं देवगइं मोत्तूणण्णगईणसाउअं बंधिदूण जेहि सम्मत्तं पच्छा पडिवण्णं ते एत्थ किण्ण गहिदा ? ण, तेसिं मिच्छत्तं गंतूणप्पणो बंधाउअवसेण उप्पज्जमाणाणं सम्मत्ताभावा सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय णिरयादिसु उप्पज्जमाणा वि मणुसम्माइटिठणो अत्थि, ते किण्ण गहिदा ? सम्मत्त-माहप्पपदुप्पायणटठं पुव्वबध्द (२ पुव्वबध्द मु.) आउअकम्ममाहप्पपदुप्पायणटठंच

जीव नियमसे सम्यक्त्व सहित ही वहांसे निकलते हैं ऐसा जिन भगवानका उपदेश है यहां तिर्यचोंमें देव, नारकी और तिर्यच सम्यग्दृष्टि जीव तो उत्पन्न होते नहीं, क्योंकि इन जीवोंके यहां उत्पन्न होनेका प्रतिपादन करनेवाला जिन भगवानका उपदेश पाया नहीं जाता इसलिये तिर्यचोंमें सम्यग्दृष्टि मनुष्य ही उत्पन्न होते हैं इसी प्रकार मनुष्योंमें मनुष्य सम्यग्दृष्टि जीवोंके उत्पत्ति साध लेना चाहिये ?

समाधान--यहां उक्त शंकाका परिहार कहते हैं वह इस प्रकार है--जिन मिथ्यादृष्टियोंने देवायुको छोड अन्य आयु बांधकर पश्चात सम्यक्त्व ग्रहण किया है, उनका यहां ग्रहण नहीं किया गया इसीलिये ऐसा कहा गया है कि सम्यग्दृष्टि मनुष्य एकमात्र देवगतिको ही जाते हैं

शंका--देवगतिको छोड अन्य गतियोंकी आयु बांधकर जिन मनुष्योंने पश्चात सम्यक्त्व ग्रहण किया है, उनका यहां ग्रहण क्यों नहीं किया गया ?

समाधान---नहीं क्योंकि पुन: मिथ्यात्वमें जाकर अपनी बांधी हुई आयुके वशसे उत्पन्न होनेवाले उन जीवोंके सम्यक्त्वका अभाव पाया जाता है

शंका--सम्यक्त्वको ग्रहण करके और दर्शनमोहनीयका क्षपण करके नरकादिकमें उत्पन्न होनेवाले भी सम्यग्दृष्टि मनुष्य होते हैं, उनका यहां क्यो नहीं ग्रहण किया गया?

समाधान--सम्यक्त्वका माहात्म्य दिखलाने और पूर्वमें बांधे हुए आयुकर्मका माहात्म्य उत्पन्न करनेकेलिये उक्त जीवोंका यहां ग्रहण नहीं किया गया

छक्खंडागमे जीवटठाणं

देवेसु गच्छंता सोहम्मीसाणप्पहुडि जाव सव्वटटसिध्दिविमाण-वासियदेचेसु गच्छंति (१ परिव्राजकानां देवेषूपपाद: आब्रहयलोकात, आजीविकानां आ सहस्त्रारात तत ऊर्ध्वमन्यलिंगिनां वास्त्युपपाद: निर्ग्रन्थलिंगधारिणामेव उत्कृष्टतपोनुष्ठानोपचितपुण्यबन्धानाम असम्यदर्शनानामुपरिमग्रैवेयकान्तेषु उपपाद:, तत ऊर्ध्व सम्यग्दर्शनज्ञानचरणप्रकर्षोपितानामेव जन्म नेतरेषाम श्रावकाणां सौधर्मादिष्वच्युतान्तेषु जन्मनाधो नोपरीति परिणामविशुध्दिप्रकर्षयोगादेव कल्पस्थानातिशये योगोऽवसेय: त.रा.४, २१. उत्पद्यन्ते सहस्त्रारे तिर्यचो व्रतसंयुता: अत्रैव हि प्रजायन्ते सम्यक्त्वाराधका नरा: न विद्यते परं हयस्मादुपपादोऽन्यलिंगिनाम निर्ग्रथश्रावका ये ते जायन्ते यावदच्युतम यावत्सर्वार्थसिध्दि तु निर्ग्रथा हि तत: परम / उत्पद्यन्ते तपोयुक्ता रत्नत्रयपवित्रिता: तत्त्वार्थसार २,१६५-१६६,१६८. णरतिरियदेसअयदा उक्कस्सेणच्चुदो त्ति णिग्गंथा णरअयददेसमिच्छा ग्रेवज्जंतो त्ति गच्छंति सव्वटठो त्ति सुदिटठो महव्वई भोगभूमिजा सम्मा सोहम्मदुगं मिच्छा भवणतियं तावसा य वरं चरया य परिव्वाजा ब्रहयोत्तरचुदपदो त्ति आजीवा गो.क.५४९. जी.प्र.टीका.) ।। १६५ ।।

सुगममेदं

मणुसा मिच्छाइटठी सासणसम्माइटठी असंखेज्जवासाउआ मणुसा मणुसेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति? ।। १६६ ।।

सुगममेदं

एक्कंहि चेव देवगदिं गच्छंति ।। १६७ ।।

देवेसु गच्छंता भवणवासिय-वाणर्वेतर-जीदिसियदेवेसु गच्छंति (२ संख्यातीतायुषो मर्त्यास्तिर्यञ्चत्र्चाप्यसददृश: उत्कृष्टास्तापसात्र्चैव यान्ति ज्योतिष्कदेवताम तत्त्वार्थसार २,१६३.) ॥ १६८ ॥

देवोंमें जानेवाले संख्यातवर्षायुष्क सम्यग्दृष्टि मनुष्य सौधर्म-ईशानसे लगाकर सर्वार्थसिध्दिविमानवासी देवों तकमें जाते हैं ॥ १६५ ॥

यह सूत्र सुगम है

मनुष्य मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि असंख्यातवर्षायुष्क मनुष्य मनुष्य-पर्यायोंसे मरण करकेकितनी गतियोंमें जाते हैं ? ॥ १६६ ॥

यह सूत्र सुगम है

उपर्युक्त मनुष्य एकमात्र देवगतिको ही जाते हैं ॥ १६७ ॥

देवोंमें जानेवाले उपर्युक्त मनुष्य भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें जाते हैं ॥ १६८॥

चूलियाए गदियागदियाए देवाणं गदीओ

मणुसा सम्माइटठीअसंखेज्जवासाउआ सम्मामिच्छत्तगुणेण मणुसा मणुसेहि णो कालं करेंति ॥ १३९ ॥

मणुसा सम्माइटठी असंखेज्जवासाउआ मणुसा मणुसेहि काल-गदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति? ॥ १७० ॥

एक्कंहि चेव देवगदिं गच्छंति ॥ १७१ ॥

देवेसु गच्छंता सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु गच्छंति (१संखातीदाऊ जायंते केइ जाव ईसाणं ति.प.४,२९४५.) ॥ १७२ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि

देवा मिच्छाइटठी सासणसम्माइटठी देवा देवेहि उवटिटव-चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति? ॥ १७३॥

सुगममेदं

मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि असंख्यातवर्षायुष्क मनुष्य सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान सहित मनुष्यपर्यायोंसे मरण नहीं करते ॥ १६९ ॥

मनुष्य सम्यग्दृष्टि असंख्यातवर्षायुष्क मनुष्यपर्यायोंसे मरण कर कितनी गतियोंमें जाते है ? || १७० ||

उपर्युक्त मनुष्य मरण कर एकमात्र देवगतिको जाते हैं || १७१ ||

देवोंमें जानेवाले उपर्युक्त मनुष्य सौधर्म और ईशान कल्पवासी देवोंमे जाते हैं || १७२ ||

ये सूत्र सुगम हैं

देव मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देव देवपर्यायोंसे उद्वर्तित व च्युत होकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? || १७३ ||

यह सूत्र सुगम है

विशेषार्थ -सूत्रकार भूतबलि आचार्यने भिन्न भिन्न गतियोंसे छूटनेके अर्थमें संभवत: गतियोंकी हीनता व उत्तमताकेअनुसार भिन्न भिन्न शब्दोंका प्रयोग किया है

दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेव (१ आ ईसाणं देवा जणणा एइंदिएसु भजिदव्वा उवरि सहस्सारंतं ते भव्वा (सव्वा) सण्णितिरियमणुवते ति.प.८,६७९. आहारगा दु देवे देवाणं सण्णिकम्मतिरियणरे पत्तेयपुढविआऊबादरपज्जत्तगे गमणं भवण-तियाणं एवं तित्थूणणरेसु चेव उप्पत्ती ईसाणंताणेगे सदरदुगंताण सण्णीसु गो.क. ५४२-५४३. भाज्या एकेन्द्रियत्वेन देवा ऐशानतश्चयुता: तिर्यक्त्वमानुषत्वाभ्यामासहस्त्रारत: पुन: तत्त्वार्थसार २,१६९.) || १७४ ||

कुदो ? देव-णिरयाउआणं बंधाभावादो

तिरिक्खेसु आगच्छंता एइंदिय-पंचिदिएसु आगच्छंति, णो विगलिंदिएसु || १७५ ||

कुदो ? सहावदो ?

एइंदिएसु (२एसु ता.२) आगच्छंता बादरपुढवीकाइय-बादरआउकाइय-बादर-वणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु || १७६ ||

नरकगति व भवनवासी, वानव्यतंर और ज्योतिषी, ये तीन देवगतियां हीन हैं, अतएव इनसे निकलनेके लिये उद्वर्तन अर्थात उध्दार होना कहा है तिर्यच और मनुष्य गतियां सामान्य हैं, अतएव उनसे निकलेनेके लिये काल करना शब्दका प्रयोग किया है और सौधर्मादिक विमानवासियोंकी गति उत्तम है, अतएव वहांसे निकलनेके लिये च्युत होना इस शब्दका उपयोग

किया गया है जहां देवगतिसामान्यसे निकलनेका उल्लेख आया है वहां भवनवासी आदि व सौधर्मादि देवोंकी अपेक्षा उद्वर्तित और च्युत दोनों शब्दोंका उपयोग किया हैं

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देव मरण कर तिर्यचगति और मनुष्यगति इन दो गतियोंमें आते हैं ॥१७४॥

क्योंकि, उक्त जीवोंके देव और नारक आयुओंके बंधका अभाव है

तिर्यचोंमें आनेवाले मिथ्यादृष्टि और सासदनसम्यदृष्टि देव एकेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवोंमें आते हैं, विकलेन्द्रियोंमें नहीं आते ॥ १७५ ॥

क्योंकि, ऐसा स्वभाव ही है

एकेन्द्रियोंमें आनेवाले उपर्युक्त देव बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तक जीवोंमें आते हैं, अपर्याप्तकोंमें नहीं ॥ १७६ ॥

१ आ ईसाणं देवा जणणा एइंदिएसु भजिदव्वा उवरि सहस्सारंतं ते भव्वा (सव्वा) सण्णितिरियमणुवते ति.प.८, ६७९. आहारगा दु देवे देवाणं सण्णिकम्मतिरियणरे पत्तेयपुढविआऊबादरपज्जत्तगे गमणं भवण-तियाणं एवं तित्थूणणरेसु चेव उप्पत्ती ईसाणंताणेगे सदरदुगंताण सण्णीसु गो.क. ५४२-२४३. भाज्या एकेन्द्रियत्वेन देवा ऐशानतश्चयुताः तिर्यक्त्वमानुषत्वाभ्यामासहस्त्रारतः पुनः तत्त्वार्थसार २, १६९.

२ एसु ता. २

चूलियाए गदियागदियाए देवाणं गदीओ

पंचिंदिएसु आगच्छंता सण्णीसु आगच्छंति, णो असण्णीसु ॥ १७७ ॥

सण्णीसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मु-च्छिमेसु ॥ १७८ ॥

गभोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १७९ ॥

पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु ॥ १८० ॥

कुदो ? दाण-दाणाणुमोदाणमभावादो, सभावदो वा सेसं सुगमं

मणुसेसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मु-च्छिमेसु ॥ १८१ ॥

पंचेन्द्रियोंमें आनेवाले उपर्युक्त देव संज्ञी तिर्यचोंमें आते हैं, असंज्ञियोंमें नहीं ॥ १७७ ॥

संज्ञी तिर्यचोंमें आनेवाले उपर्युक्त देव गर्भोपक्रान्तिकोंमें आते हैं, सम्मूर्च्छिमोंमें नहीं आते ॥ १७८ ॥

गर्भोपक्रान्तिकोंमें आनेवाले उपर्युक्त देव पर्याप्तकोमें आते है, अपर्याप्तकोंमें नहीं आते ॥ १७९ ॥
पर्याप्तकोंमें आनेवाले उपर्युक्त देव संख्यातवर्षायुष्कोंमें आते हैं, असंख्यात-वर्षायुष्कोंमें नहीं आते ॥ १८० ॥

क्योंकि, उपर्युक्त देवोंमें दान और दानके अनुमोदन (इन भोगभूमिमें उत्पत्तिके दो कारणों) का अभाव है अथवा स्वभावसे ही उपर्युक्त देव असंख्यातवर्षायुष्क भोगभूमिके तिर्यचोंमें नहीं उत्पन्न होते शेष सूत्रार्थ सुगम है

मनुष्योंमें आनेवाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देव गर्भोपक्रान्तिकोंमे आते हैं, सम्मूर्च्छिमोंमें नहीं आते ॥ १८१ ॥

छक्खंडागमे जीवटठाणं

गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १८२ ॥

पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु ॥ १८३ ॥

सव्वमेदं सुगमं (१ सव्व सुगममेदं ता.१)

देवा सम्मामिच्छाइटठी सम्मामिच्छत्तगुणेण देवा देवेहिं णो उव्वटटंति, णो चयंति ॥ १८४ ॥

सुगममेदं

देवा सम्माइटठी देवा देवेहि उव्वटिटद-चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति? ॥ १८५ ॥

एक्कंहि चेव मणुसगदिमागच्छंति ॥ १८६॥

कुदो ? देवसम्माइटठीणं मणुसाउअं मोत्तूण अण्णाउआणं बंधाभावादो

गर्भोपक्रान्तिक मनुष्योंमें आनेवाले उपर्युक्त देव पर्याप्तकोंमें आते हैं, अपर्याप्तकोंमें नहीं आते ॥ १८२ ॥

पर्याप्तक मनुष्योंमें आनेवाले उपर्युक्त देव संख्यातवर्षायुष्कोंमें आते हैं असंख्यातवर्षायुष्कोंमे नहीं आते ॥ १८३॥

ये सब सूत्र सुगम है

देव सम्यग्मिथ्यादृष्टि सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान सहित देवपर्यायोंसे न उद्वर्तित होते हैं और न च्युत होते हैं ॥ १८४ ॥

यह सूत्र सुगम है ॥

देव सम्यग्दृष्टि देव देवपर्यायोंसे उद्वर्तित व च्युत होकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? ॥ १८५ ॥

सम्यग्दृष्टि देव मरण कर केवल एक मनुष्यगतिमें ही आते हैं ॥ १८६ ॥

क्योंकि, सम्यग्दृष्टि देवींके मनुष्यायुको छोड अन्य आयुओंके बन्धका अभाव है

चूलियाए गदियागदियाए देवाणं गदीओ

मणुसेसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ १८७ ॥

गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १८८ ॥

पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु ॥ १८९ ॥

सव्वमेदं सुगमं

भवणवासिय-वाणवेंतर जोदिसिय-सोधम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगदिभंगो ॥ १९० ॥

एदं पि सुगमं

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु पढम-पुढवीभंगो णवरि चुदा त्ति भाणिदव्वं ॥ १९१ ॥

मनुष्योंमें आनेवाले सम्यग्दृष्टि देव गर्भोपक्रान्तिकोंमें आते हैं, सम्मूर्च्छिमोंमें नहीं आते ॥ १८७ ॥

गर्भोपक्रान्तिक मनुष्योंमें आनेवाले सम्यग्दृष्टि देव पर्याप्तकोंमे आते हैं, अपर्याप्तकोंमें नही आते ॥ १८८ ॥

पर्याप्तक गर्भोपक्रान्तिक मनुष्योंमें आनेवाले सम्यग्दृष्टि देव संख्यातवर्षा-युष्कोमें आते हैं, असंख्यातवर्षायुष्कोंमें नहीं आते ॥ १८९ ॥

ये सब सूत्र सुगम हैं

भवनवासी, वानव्यतर, ज्योतिषी तथा सौधर्म और ईशान कल्पवासी देवोंकी गति उपर्युक्त देवगतिके समान है ॥ १९० ॥

यह सूत्र भी सुगम है

सनत्कुमारसे लगाकर शतार-सहस्रार कल्पवासी देवोंकी गति प्रथम पृथवीके नारकी जीवोंकी गतिके समान है केवल यहां उद्वर्तित होते हैं के स्थान पर च्युत होते हैं ऐसा कहना चाहिये ॥ १९१ ॥

छक्खंडागमे जीवटठाणं

एदं पि सुगमं

आणदादि जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइटठी सासणसम्माइटठी असंजदसम्माइटठी देवा देवेहि चदुसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति? ॥ १९२ ॥

सुगममेदं

एक्कंहि चेव मणुसगदिमागच्छंति ॥१९३॥

कुदो ? सुक्कलेस्सियाणं तेसिं मणुसाउएण विणा अण्णाउआणं बंधाभावा

मणुसेसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मु-च्छिमेसु ॥ १९४ ॥

गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १९५ ॥

यह सूत्र भी सुगम है

आनतसे लगाकर नव ग्रैवेयकविमानवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देव देवपर्यायोसे च्युत होकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? ॥ १९२ ॥

यह सूत्र सुगम है

उपर्युक्त देव केवल एक मनुष्यगतिमें ही आते हैं ॥ १९३ ॥

क्योंकि, शुक्ललेश्यावाले उपर्युक्त देवोंके मनुष्यायुको छोड अन्य आयुओंके बन्धका अभाव है

मनुष्योंमें आनेवाले उपर्युक्त देव गर्भोपक्रान्तिकोंमें आते हैं, सम्मूच्छिमोंमें नहीं आते ॥ १९४॥

गर्भोपक्रान्तिक मनुष्योंमें आनेवाले उपर्युक्त देव पर्याप्तकोंमें आते हैं, अपर्याप्तकोंमे नहीं आते ॥ १९५ ॥

१ तत्तो उवरिमदेवा सव्वा सुक्काभिधाणलेस्साए उप्पज्जंति मणुस्से णत्थि तिरिक्खेसु उववादो ति.प.८,६८०. ततः परं तु ये देवास्ते सर्वेऽनन्तरे भवे उत्पद्यन्ते मनुष्येषु न हि तिर्यक्षु जातुचित तत्वार्थसार २, १७०.

पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु (१ देवगदीदो चत्ता कम्मक्खेत्तम्मि सण्णिपज्जत्ते ॑ गब्भभवे जायंते ण भोगभूमीण णर-तिरिए ति.प.८,६८१.) ॥ १९६ ॥

सव्वमेदं सुगमं

आणद जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवा सम्मामिच्छाइटठी सम्मामिच्छत्तगुणेण देवा देवेहि णो चयंति ॥ १९७ ॥

अणुदिस जाव सव्वटठसिध्दिविमाणवासियदेवा असंजदसम्माइटठी देवा देवेहि चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति? ॥ १९८ ॥

एक्कं हि मणुसगदिमागच्छंति ॥ १९९ ॥

एक्कं हि मणुसगदिमागच्छंति,(२ता.२प्रतौ एक्कं हि मणुसगदि मागच्छंति इति पाठो नार्स्ति) सुक्कलंस्सियत्तादो सम्माइटिठत्तादो वा

मणुसेसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ २०० ॥

गर्भोपक्रान्तिक पर्याप्त मनुष्योंमें आनेवाले उपर्युक्त देव संख्यातवर्षायुष्कोंमें आते हैं, असंख्यातवर्षायुष्कोंमें नहीं आते ॥ १९६ ॥

ये सब सूत्र सुगम है

आनतसे लगाकर नव ग्रैवेयक तकके विमानवासी सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव सम्य-ग्मिथ्यात्व गुणस्थान सहित देवपर्यायोंसे च्युत नहीं होते ॥ १९७ ॥

अनुदिशसे लगाकर सर्वार्थसिध्दि तकके विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टि देव देवपर्यायोंसे च्युत होकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? ॥ १९८ ॥

उपर्युक्त देव केवल एक मनुष्यगतिमें ही आते हैं ॥ १९९ ॥

उपर्युक्त देवोंके केवल एक मनुष्यगतिमें ही आनेका कारण उनका शुल्कलेश्या-युक्त होना अथवा सम्यग्दृष्टि होना ही है

मनुष्योंमें आनेवाले उपर्युक्त देव गर्भोपक्रान्तिकोंमें आते हैं, सम्मूर्च्छिमोंमें नहीं आते ॥ २०० ॥

छक्खंडागमे जीवटठाणं

गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ २०२ ॥

पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु ॥ २०२ ॥

सव्वमेदं सुगमं

अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइया णिरयादो णेरइया उव्वटिटदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २०३ ॥

एक्कं हि चेव तिरिक्खगदिमागच्छंति (१ गच्छंति त्ति.मु.) ॥ २०४ ॥

पुणरुत्तत्तादो णेदं सुत्तं वत्तव्वं? ण एस दोसो, जडमइसिस्साणुग्गहहेदुत्तादो

तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा छण्णो उप्पाएंति-आभिणिबोहियणाणं णो उप्पाएंति, सुदणाणं णो उप्पाएंति, ओहिणाणं

गर्भोपक्रान्तिक मनुष्योंमें आनेवाले उपर्युक्त देव पर्याप्तकोंमें आते हैं, अप-र्याप्तकोंमें नही आते ॥ २०१ ॥

गर्भोपक्रान्तिक पर्याप्त मनुष्योंमें आनेवाले उपर्युक्त देव संख्यातवर्षायुष्कोंमें आते हैं, असंख्यातवर्षायुष्कोंमें नहीं आते ॥ २०२ ॥

ये सब सूत्र सुगम है ॥

नीचे सातवीं पृथिवीके नारकी नरकसे निकलकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? ॥ २०३ ॥

सातवीं पृथिवीसे निकले हुए नारकी जींव केवल एक तिर्यचगतिमें आते हैं ॥ २०४ ॥

शंका---(सातवीं पृथिवीसे निकलनेवाले नारकी जीवोंके गतिका निर्देश ९४ आदि सूत्रोंमें कर आये हैं, अतएव) पुनरुक्त होनेसे प्रस्तुत सूत्र नहीं कहना चाहिये ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, इस पुनरुक्तिका हेतु जडमति शिष्योंका अनुग्रह करना है

तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच इन छहकी उत्पत्ति नहीं करते-आभिनिबोधिक ज्ञानको उत्पन्न नहीं करते, श्रुतज्ञानको उत्पन्न नहीं करते, अवधि-

चूलियाए गदियागदियाए णेरइयाणं गदीओ गुणुप्पादणं च

णो उप्पाएंति, सम्मामिच्छत्तं णो उप्पाएंति सम्मतं, णो उप्पाएंति,(१ आतुरिमखिदी चरमंगधारिणो संजदा य धूमंतं छटठंत देसवदा सम्मत्ताधरा केइ चरिमंतं ति.प.२,२९२.अहेसत्तमपुढवी-पुच्छा गोयमा णो इणटठे समटठे,सम्मत्तं पुण लभेज्जा प्रज्ञापना २०,१०.सप्तभ्योऽपि सदृश: लो.प्र.१४,११.) संजमासंजमं णो उप्पाएंति (२ सप्तम्यां नारका मिथ्यादृष्टयो नरकेभ्य उद्वर्तिता एकामेव तिर्यग्गतिमायान्ति तिर्यक्ष्वायाता पंचेन्द्रियगर्भजपर्याप्तकसंख्येयवर्षायु:षूत्पद्यन्ते नेतरेषु तत्र चोत्पन्ना: सर्वे मतिश्रुतावधिसम्यक्त्व सम्यङमिथ्यात्वसंयमासंयमान्नोत्पादयन्ति त.रा.३,६.) ॥ २०५ ॥

तित्थयरादीणं पडिसेहो एत्थ किण्ण कदो ? ण तिरिक्खेसु तेसिं संभवाभावा, सव्वस्स पडिसेहस्स पत्तिपुव्वस्सुवलंभादो सासणगुणपडिसेहो किण्ण कदो ? ण, सम्मत्ते पडिसिध्दे तत्तो उप्पज्जमाणसासणसम्मत्तगुणपडिसेहस्स अणुत्तसिध्दीदो

छटठीए पुढवीए णेरइया णिरयादो णेरइया उव्वटिटदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २०६॥

ज्ञानको उत्पन्न नहीं करते, सम्यग्मिथ्यात्व गुणको उत्पन्न नहीं करते, सम्यक्त्वको उत्पन्न नहीं करते, और संयमासंमयको उत्पन्न नहीं करते ॥ २०५ ॥

शंका--तीर्थकरादिका यहां प्रतिषेध क्यों नहीं किया ?

समाधान--नहीं, क्योंकि तीर्थकरादिकोंका तिर्यचोंमें होना संभव नहीं है सर्व प्रतिषेधमें पहले प्रतिषेध्य वस्तुकी उपलब्धि पाई जाती है

शंका -- तिर्यचोंमें सासादन गुणस्थानकी प्राप्तिका प्रतिषेध क्यों नहीं किया ?

समाधान --नहीं, क्योंकि सम्यक्त्वका प्रतिषेध कर देनेपर सम्यक्त्वसे उत्पन्न होनेवाले सासादनसम्यक्त्व गुणकेप्रतिषेधकी सिध्दि विना कहे ही हो जाती है

छठवीं पृथिवीकेनारकी नरकसे नारकी होते हुए निकलकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? ॥ २०६ ॥

एत्थ छटठीए पुढवीए णेरइया उव्वटिटदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति त्ति वत्तव्वं, ण णिरयादो णेरइया त्ति, तस्स फलाभावा? ण एस दोसो छटठीए पुढवीए णेरइया णिरयादो णिरयपज्जायादो उव्वटिटदसमाणा विणटठा संता णेरइया दव्वटिठयणया-वलंबणेण णेरइया होदूण कदि गदीओ आगच्छंति त्ति तदुच्चारणाए फलोवलंभा सेसं सुगमं

दुवे गदीयो (१ दुवे दु गदीयो ता.१)आगच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेव ॥ २०७ ॥

एदं पि सिस्स (२ ससि.ता.१) संभालणटठं परुविदं

तिरिक्ख-मणुस्सेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा मणुसा केइं छ उप्पाएंति-केइं आभिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्त-मुप्पाएंति, केइं संजमासंजमुप्पाएंति (३षष्ठया उद्वर्तिता नारकास्तिर्यङमनुष्येषु जाताः केचिन्मतिश्रुतावधिसम्यक्त्वसम्यग्मिथ्यात्वसंयमा-संयमान षडुत्पादयन्ति,न सर्वे,नाप्यतोऽन्यत त.रा.३,६.) ॥२०८॥

शंका--यहां छठवीं पृथवीसे निकलकर नारकी कितनी गतियोंमें आते हैं ऐसा सूत्र चाहिये, नरकसे नारकी होते हुए यह कहने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि इन पदोंका कोई फल नहीं है?

समाधान--यह कोई दोष नहीं, क्योंकि छठवी पृथ्वीके नारकी, नरकसे अर्थात नरक-पर्यायसे, निकलकर अर्थात विनष्ट होकर, नारकी अर्थात द्रव्यार्थिक नयके अवलम्बसे नारकी होते हुए कितनी गतियोंमें आते हैं ऐसा सूत्रोक्त उन पदोंके उच्चारणका फल पाया जाता है शेष सूत्रार्थ सुगम है

छठवीं पृथिवीसे निकलनेंवाले नारकी जीव दो गतियोंमें आते हैं --- तिर्यचपति और मनुष्यगति ll २०७ ll

यह सूत्र भी (पुनरुक्त होते हुए भी, शिष्योंको स्मरण करानेकेअर्थ प्ररुपित किया गया है)

तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच व मनुष्य कोई छह उत्पन्न करते हैं --कोई आभिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करतें हैं, कोई श्रुतज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई अवधिज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई सम्यग्मिथ्यात्व उत्पन्न करते हैं कोई सम्यक्त्व उत्पन्न करते हैं, और कोई संयमासंयम उत्पन्न करते हैं ll २०८ ll

चूलियाए गदियागदियाए णेरइयाणं गदीओ गुणुप्पादणं च

सासणसम्मत्तं सम्मत्ते पविसदि त्ति पुध ण उत्तं(१ मघव्या मनुष्यलाभो न षष्ठया भूमेर्विनिर्गता: संयमं तु पुन: पुण्यं नाप्नुवन्तीति निश्चय: तत्त्वार्थसार २,१४९.) सेसं संजमादिं णो उप्पाएंति कधं (२ णो उप्पाएंति त्ति कथं मु.) णव्वदे ?

विहीए अभावादो च होंतं ण भणइ तित्थयरो, विरोहादो

पंचमीए पुढवीए णेरइया णेरइयादो णेरइया उव्वटिटदसमणा कदि गदीओ आगच्छंति,? ll २०९

दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगदिं चेव मणुसगदिं चेव ll २१० ll

तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा केइं छ उप्पाएंति (३ पंचम्या उध्दर्तितास्तिर्यक्षूत्पन्ना: केचित्षडूत्पादयन्ति, न सर्वो, नाप्यतोन्यत त.रा.३,६. उफयंति उपायंति ता.२ अग्रेऽपि ता.२ प्रतावेवमेव) ll २११ ll

तिरिक्खभवमछंडिऊणेत्ति जाणावणटठं विदियतिरिक्खगहणं ताणि छ पुव्वं परुविदाणि त्ति णेह कहियाइं

सासादनसम्यक्त्व सम्यक्तवमें प्रविष्ट हो जाता है, इसलिये उसका यहां पृथक उल्लेख नहीं किया गया

शंका--छठी पृथिवीसे आकर तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले तथा उक्तजीव संयम आदिको उत्पन्न नहीं करते तिर्यंच और मनुष्य संयमादि शेष गुणोंको उत्पन्न नहीं करते यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान--क्योंकि उनके संयमादि उत्पन्न करनेका विधान नहीं किया गया यदि उनमें संयमादिकी उत्पत्ति होती तो यह हो नहीं सकता था तीर्थकर उसका प्रतिपादन न करें, क्योंकि ऐसा माननेमें विरोध आता है

पांचवीं पृथवीके नारकी जीव नरकसे नारकी होते हुए निकलकर कितनी गतियोंमें आते हैं,? ॥ २०९ ॥

पांचवीं पृथवीसे निकलकर नारकी जीव दो गतियोंमें आते हैं -- तिर्यचगति और मनुष्यगति ॥ २१० ॥

तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच कोई छह उत्पन्न करते हैं ॥ २११ ॥

तिर्यचभवको न छोडकर यह जतलानेकेलिये सूत्रमें दूसरी वार तिर्यच शब्दका उपयोग किया गया है उन छहका प्ररुपण पहले कर आये हैं इसलिये यहां उनका नामोल्लेख नहीं किया गया

मणुस्सेसु उववण्णल्लया (१ उववज्जतया ता.१) मणुसा केइमटठमुप्पाएंति-केइमाभिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति, केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मतमुप्पाएंति, केइं संजमासंजममुप्पाएंति, केइं संजममुप्पाएंति (२

मनुष्येषूत्पन्नाःकेचिन्मातिश्रुतावधिमनःपर्ययसम्यक्त्वसम्यङमिथ्यात्वसंयमासंयमसंयमानुत्पादयन्ति, न सर्वे, नाप्यतोन्यत त.रा.३,६.निर्गताःखल्लू पञ्चम्या लभन्ते केचन व्रतम प्रयान्ति न पुनर्मुक्ति भाव-संल्केशयोगतः तत्वार्थसार २,१५०.) ॥ २१२ ॥

कुदो? पंचमीए आगदस्स तिव्वसंकिलेसाभावादो सेसं सुगमं

चउत्थीए पुढवीए णेरइया णिरयादो णेरइया उव्वटिटदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति? ॥ २१३ ॥

दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगइं चेव मणुसगइं चेव ॥ २१४ ॥

सव्वमेदं सुगमं

मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले मनुष्य कोई आठको उत्पन्न करते हैं --कोई अभिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई श्रुतज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई अवधिज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई मन:पर्ययज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई सम्यग्मिथ्यात्व उत्पन्न करते हैं कोई सम्यक्त्व उत्पन्न करते हैं, कोई संयमासंयम उत्पन्न करते हैं, और कोई संयम उत्पन्न करते हैं ॥ २१२ ॥

क्योंकि, पांचवीं पृथिवीसे आये हुए जीवके तीव्र संक्लेशका अभाव है शेष सूत्रार्थ सुगम है चौथी पृथवीके नारकी जीव नरकसे नारकी होते हुए निकलकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? ॥ २१३ ॥

चौथी पृथवीसे निकलनेवाले नारकी जीव दो गतियोंमें आते हैं ---तिर्यचगति और मनुष्यगति ॥ २१४ ॥

ये सब सूत्र सुगम हैं

चूलियाए गदियागदियाए णेरइयाणं गदीओ गुणुप्पादणं च

तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा केइं छ उप्पाएंति (१ चतुर्थ्या उद्वर्तितास्तिर्यक्षूत्पन्ना: केचिन्मत्यान्ति षडुत्पादयन्ति, न सर्वे, नाप्पतोन्यत त.रा.३,६.) ॥ २१५ ॥

ताणि वि सुपसिध्दाणि त्ति णेह परुवियाइं

मणुसेसु उववण्णल्लया मणुसा केइं दस उप्पाएंति-केइमाहिणि-बोहियणाणमुप्पाएंति,केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति,केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति केइं केवलणाणमुप्पाएंति,केइं सम्मा-मिच्छत्तमुप्पाएंति,केइं सम्मत्तमुप्पाएंति,केइं संजमासंजममुप्पाएंति,केइं संजममुप्पाएंति णो बलदेवत्तं वासुदेवत्तं णो चक्कवटिटत्तं (३मुच्चंति ता.२) णो तित्थरत्तं केइमंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति (२ बज्झंति ता.१) मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्वदुक्खाणमंतं परिविजाणंति

(४मनुष्येषूत्पन्ना:केचिन्मतिश्रुतावधिमन:पर्ययकेवलसम्यक्त्वसम्यङमिथ्यात्वसंयमासंयमसंयमानुत्पादयन्ति, न च बलदेववासुदेवचक्रधरतीर्थकरत्वान्युत्पादयन्ति, केचित्कर्माष्टकान्तकरा:सिध्यन्ति त.रा.३,६.लभन्ते निर्वृत्ति केचिच्चतुर्थ्या निर्गता: क्षिते: न पुन: प्राप्नुवत्येव पवित्रां तीर्थकर्तृताम तत्त्वार्थसार २, १५१. मणुस्सा णं भंते ! अणंतरं उव्वटिटत्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं

नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति? गोयमा नेरइएसु वि उववज्जंति जाव देवेसु वि उववज्जंति xxx अत्थेगतिया सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति प्रज्ञापना ६, ६.) ||२१५||

तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच कोई छह उत्पन्न करते हैं || २१५ ||

वे छह पूर्वोक्त होनेकेकारण सुप्रसिध्द हैं, अतएव यहां उनका प्ररुपण नहीं किया गया

मनुष्योंमें होनेवाले मनुष्य कोई दश उत्पन्न करते हैं --- कोई अभिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई श्रुतज्ञान करते हैं, कोई अवधिज्ञान उत्पन्न करते हैं. कोई मन:पर्ययज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई केव्लज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई सम्यग्मिथ्यात्व उत्पन्न करते हैं, कोई सम्यक्त्व उत्पन्न करते हैं, कोई संयमासंयय उत्पन्न करते हैं, और कोई संयम उत्पन्न करते हैं वे न बलदेवत्व उत्पन्न करते, न वासुदेवत्व न चक्र्वर्तित्व, और न तीर्थकरत्व कोई अन्तकृत होकर सिध्द होते हैं, बुध्द होते हैं, मुक्त होतें हैं, परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं, व सर्व दु:खोंके अन्त होनेका अनुभव करते हैं || २१६ ||

छक्खंडागमे जीवटठाणं

अष्टकर्मणामंतं विनाशं कुर्वन्तीति अन्तकृत: अंतकृतो भूत्वा सिज्झंति सिध्दयन्ति निरिस्तष्ठंति निष्पद्यन्ते स्वरुपेणेत्यर्थ: बुज्झंति त्रिकालगोचरानन्तार्थव्यजन-परिणामात्मकाशेषवस्तुतत्त्वं बुध्दयन्ति (१ बुध्यन्ते ता.१) अवगच्छन्तीत्यर्थ:

केव्लज्ञाने समुत्पन्नेऽपि सर्व न जानातीति कपिलो बूते तन्मतविराकरणार्थ (२ तन्न,तन्नि राकरणार्थ) बुध्यन्त इत्युच्यते मोक्षो हि नाम बन्धपूर्वक:, बन्धश्च (३ बंधकत्र्च ता.१ मु.) न जीवस्यास्ति, अमूर्तत्वा-न्नित्यत्वाच्चेति तस्माज्जीवस्य न मोक्ष इति नैयायिक-वैशेषिक-सांख्य-(४ स्यादेतत पुरुषत्र्चेदगुणोऽपरिणामी कथमस्य मोक्ष: मुचेर्बन्धनवित्र्लेषार्थत्वात सदासनक्लेशकम्मशियानाञ्च बन्धनसंज्ञितानां पुरुषे अपरिणामिन्यसम्भवात अतएवास्य न संसार: प्रेत्यभावापरनामास्ति, निष्क्रियत्वात तस्पातपुरुष विमोक्षार्थमिति रिक्तं वच: इतीमामाशङ्कामुपसंहारव्या मेनाभ्युपगच्छन्नपाकरोति-तस्मान्न बध्यतेऽध्दा न मुच्यते नापि संसरति कत्र्चित संसरति बध्यते मुच्यते च नानश्रया प्रकृति: ६२ सांख्यतत्वकौमुदी.) मीमांसकमतम एतन्निराकरणार्थ मुच्चंतीति प्रतिपादितम परिणिव्वाणयंति-(५ परिणिव्वायंति ता.२) अंशेषबन्धमोक्षे सत्यपि न परिनिर्वान्ति, सुख-दुखहेतुशुभाशुभकर्मणां तत्रासत्वादिति

तार्क्किकयोर्मतं तन्निराकरणार्थ परिनिर्वान्ति अनन्तसुखा भवन्तीत्युच्यते यत्र सुखं तत्र निश्चयन दु:खमप्यस्ति

जो आठ कर्मोका अन्त अर्थात विनाश करते हैं वे अन्तकृत कहलाते हैं अन्तकृत होकर सिध्द होते हैं निष्ठित होते हैं व अपने स्वरुपसे निष्पन्न होते हैं, ऐसा अर्थ जानना चाहियें जानते हैं अर्थात त्रिकालगोचर अनन्त अर्थ और व्यंजन पर्यायात्मक अशेष वस्तुतत्त्वको जानते हैं व समझते हैं

कपिलका कहना है कि केवलज्ञान उत्पन्न होनें पर भी सब वस्तुस्वरुपका ज्ञान नहीं होता अत: उनके मतका निराकरण करनेके लिये बुध्द होते हैं यह पद कहा गया है मोक्ष बन्धपूर्वक ही होता है, किन्तु जीवके तो बन्ध ही नहीं है, क्योंकि जीव अमूर्त है और नित्य है अतएव जीवका मोक्ष नहीं होता ऐसा नैयायिक, वैशेषिक, सांख्य और मीमांसकोंका मत है इसी मतके निराकरणार्थ मुक्त होते हैं ऐसा प्रतिपादित किया गया हैं परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं इस पद की सार्थकता इस प्रकार है--अशेष बन्धका मोक्ष ही जानेपर भी जीव परिनिर्वाणको प्राप्त नहीं होते, क्योंकि उस मुक्त अवस्थामें सुखके हेतु शुभकर्म और दुखके हेतु अशुभ कर्मोका अभाव पाया जाता है, ऐसा दोनों तार्क्किकोंका मत है इसी तार्क्किकमतके निराकरणार्थ परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं अर्थात अनन्त सुखका उपभोग करनेवाले होते हैं, ऐसा कहा गया है जहां सुख है वहां निश्चयसे दुख भी है क्योंकि सुखका दुखके साथ अविनाभावी

चूलियाए गदियागदियाए णेरइयाणं गदीओ गुणुप्पादणं च

दु;खाविनाभवित्वात्सुखस्येति तार्क्किकयोरेव मतं, तन्निराकरणार्थ सर्वदु:खानामन्तं परिविजाणंतीति उच्चते सर्वदु:खानामन्तं पर्यवसानं परिविजानन्ति गच्छन्तीत्यर्थ: कुत:? दु:खहेतुकर्मणां विनष्टत्वात, स्वास्थ्यलक्षणस्य (१ स्वास्थ्यं यदात्यन्तिकमेष पुंसां स्वार्थो न भोग: परिभङ्गुरात्मा तृषोऽनुषङ्गान्न च तापशान्तिरिती-दमाख्यद भगवान सुपार्त्र्व: बृहत्स्वयंभूस्तोत्र ३१. आत्मोत्थमात्मना साध्यमव्याबाधमनुत्तरम अनन्त स्वास्थ्य-मानन्दमतृष्णपवर्गजम क्षत्रचूडामणि ७,१३. आत्म ज्ञातृतया ज्ञानं सम्यक्तवं चरितं हि स: स्वस्थो दर्शनचारित्रमोहाभ्यामनुपप्लुत: तत्त्वार्थसार, उपसंहार, ७.) सुखस्य जीवस्य स्वाभा-विकत्वादिति

तिसु उवरिमासु पुढवीसु णेरइया णिरयादो णेरइया उव्वटिटद-समाणा कर्दि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २१७ ॥

दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेव ।। २१८ ।।

तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा केइं छ उप्पाएंति ।। २१९ ।।

सववमेदं सुगमं

सम्बन्ध है, ऐसा दोनों ही तार्क्किोंका मत है उसी मतके निराकरणार्थ सर्व दुखोंके अन्त होनेका अनुभव करतें हैं ऐसा कहा गया है इसका अर्थ यह है कि वे जीव समस्त दु:खोंके अन्त अर्थात अवसानको पहुंच जाते हैं, क्योंकि उनके दु:खके हेतुभूत कर्मोका विनाश हो जाता है और स्वास्थ्यलक्षण सुख जो जीवका स्वाभाविक गुण है वह प्रकट हो जाता है

ऊपरकी तीन पृथिवियोंके नारकी जीव नरकसे नारकी होते हुए निकलकर कितनी गतियोंमें आते हैं? ।। २१७ ।।

ऊपरकी तीन पृथिवियोंसे निकलनेवाले नारकी जीव दो गतियोंमें आते हैं --तिर्यचगति और मनुष्यगति ।। २१८ ।।

ऊपरकी तीन पृथिवियोंसे निकलकर तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच कोई छह उत्पन्न करते हैं ।। २१९ ।।

यह सब सुगम है

छक्खंडागमे जीवटठाणं

मणुसेसु उववणल्लया मणुस्सा केइमेक्कारस उप्पाएंति-केइमाभिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइं मण-पज्जवणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति, केइं केवलणाणमुप्पाएंति, केइं केवलणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्तमुप्पाएंति, केइं संजमासंजम-मुप्पाएंति, केइं संजममुप्पाएंति णो बलदेवत्तं णो वासुदेवत्तमुप्पाएंति, णो चक्कवटिटमुप्पाएंति (१ निर्गत्य नारका न स्युर्बल-केसव-चक्रिण: तत्त्वार्थसार २,१५२.) केइं तित्थयरत्तमुप्पाएंति, केइमंतयडा होदूण सिज्झंति (२ उपरि तिसृभ्य उद्वर्तितास्तिर्यक्षु जाता: केचित्षडुत्पादयन्ति मनुष्येंषूत्पन्ना: केचिन्मतिश्रुताविधि-) बुज्झंति मुच्यंति परिणिव्वाणयंति सव्वदु:खाणमंतं परिविजाणंति ।। २२० ।।

सुगममेदं

तिरिक्खा मणुसा तिरिक्ख-मणुसेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ।। २२१ ।।

ऊपरकी तीन पृथिवियोंसे निकलकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले मनुष्य कोई ग्यारह उत्पन्न करते हैं- कोई आभिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई श्रुतज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई मन:पर्ययज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई अविधिज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई केवलज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई सम्यग्मिथ्यात्व उत्पन्न करते हैं कोई सम्यक्त्व उत्पन्न करते हैं, कोई संयमासंयम उत्पन्न करते हैं, और कोई संयम उत्पन्न करते हैं किन्तु वे जीव न बलदेवत्व उत्पन्न करते, न वासुदेवत्व उत्पन्न करते, और न चक्रवर्तित्व उत्पन्न करते हैं कोई तीर्थकरत्व उत्पन्न करते हैं, कोई अन्तकृत होकर सिध्द होते हैं, बुध्द होते हैं, मुक्त होते हैं, परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं, व सर्व दुखोंकेअन्त होनेका अनुभव करते करते हैं ॥ २२० ॥

यह सूत्र सुगम है

तिर्यंच व मनुष्य, तिर्यंच व मनुष्य पर्यायोंसे मरण करके, कितनी गतियोंमें जाते हैं ? ॥ २२१ ॥

चूलियाए गदियागदियाए तिरिक्ख-मणुस्साणं गदीओ गुणुप्पादणं च

चत्तारि गदीओ गच्छंति णिरयगदिं तिरक्खगदिं मणुसगदिं देवगदिं चेदि ॥ २२२ ॥

णिरय-देवसु उववण्णल्लया णिरय-देवा केइं पंचमुप्पाएंति केइमाभिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहि-णाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्तमुप्पाएंति ॥ २२३ ॥

सुगममेदं

तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा मणुसा केइं छ उप्पाएंति ॥ २२४ ॥

एदं पि सुगमं

मणुसेसु उववण्णल्लया तिरिक्ख-मणुस्सा जहा चउत्थपुढवीए भंगो (१ संखेज्जाउवमाणा मणुवा णर-तिरिय-देव-णिरएसुं सव्वेसुं जायंते सिध्दगदीओ वि पावंति ते पुढविभंगो ता.१) ॥ २२५ ॥

तिर्यच व मनुष्य मरण करके चारों गतियोंमें जाते हैं- नरकगति, तिर्यचगति, मनुष्यगति और देवगति ॥ २२२ ॥

तिर्यच व मनुष्य मरण करके नरक व देवोंमेंउत्पन्न होनेवाले नारकी व देव कोई पांच उत्पन्न करते हैं --कोई आभिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई श्रुतज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई

अवधिज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई सम्यग्मिथ्यात्व उत्पन्न करते हैं, और कोई सम्यक्त्व करते हैं ।। २२३ ।।

ये सूत्र सुगम है

तिर्यचोंमें उपत्पन्न होनेवाले तिर्यच व मनुष्य कोई छह उत्पन्न करते हैं ।।२२४ ।।

ये सूत्र भी सुगम है

मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच व मनुष्य चतुर्थपृथिवीसे निकलकर मनुष्योंमेंउत्पन्न होनेवाले जीवोंकेसमान गुण उत्पन्न करते हैं ।। २२५ ।।

मन पर्ययकेवलसम्यक्त्वसम्यङमिथ्यात्वसंयमासंयमानुत्पादयन्ति, न च बलदेववासुदेवचक्रधरत्वान्युत्पादयन्ति, केचितीर्थकरत्वमुत्पादयन्ति, अपरे कर्माष्टकान्तकारा: सिध्यन्ति त.रा.३,६.

एदं पि सुगमं

देवगदीए देवा देवेहि उव्वटिटद-चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्दंति ? ।। २२६ ।।

दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेदि ।। २२७ ।।

तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा केइं छ उप्पाएंति ।। २२८ ।।

सव्वमेदं सुगमं

मणुसेसु उववण्णल्लया मणुसा केइं सव्वं उप्पाएंति -- केइंमा-भिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति केइमोहिणाण-मुप्पाएंति, केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केइं केवलणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्तमुप्पाएंति, केइं संजमासंजम-

यह सूत्र भी सुगम है

देवगतिमें देव देवपर्यायों सहित उद्वर्तित और च्युत होकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? ।। २२६ ।।

देवगतिसे निकले हुए जीव दो गतियोंमें आते हैं --तिर्यचगति और मनुष्यगति ।। २२७ ।।

देवगतिसे निकलकर तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच कोई छह उत्पन्न करते हैं ।। २२८ ।।

ये सब सूत्र सुगम हैं

देवगतिसे निकलकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले मनुष्य कोई सर्व गुणोंको उत्पन्न करते हैं --- कोई आभिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई श्रुतज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई अवधिज्ञान

उत्पन्न करते हैं, कोई मन:पर्ययज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई केवलज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई सम्यग्मिथ्यात्व उत्पन्न करते हैं, कोई सम्यक्त्व

संखातीदाऊ जायंते केइ जाव ईसाणं ण हु होंति सलायणरा जम्मम्मि अणंतरे केई ति.प. २९४४-२९४५.

शलाकापुरुषा नैव सत्यनन्तरजन्मनि तिर्यञ्चो मानुषात्त्रैव भाज्या: सिध्दगतौ तु ते तत्त्वार्थसार २,१६१.

चूलियाए गदियागदियाए देवाण गदीओ गुणुप्पादणं च

मुप्पाएंति, केइं संजमं उप्पाएंति, केइं बलदेवत्तमुप्पाएंति, केइं वासु-देवत्तमुप्पाएंति, केइं चक्कवटिटत्तमुप्पाएंति, केइ तित्थरत्तमुप्पाएंति, केइमंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्व-दु:खाणमंतं परिविजाणंति (१ संवुडे णं भंते अणगारे सिज्झइ बुज्झइ मुच्यइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ, सेकेणटठेण सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ? गोयमा, संवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ घाणियबंधणबध्दाओ सिढिलबंधबध्दाओ पकरेइ, दीहकालटिठईयाओ हस्सकालटिठइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं ण बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमध्दं चाउरंतससारकंतारं वीइवयइ से एएणठठेणं गोयमा, एवं वुच्चइ--संवुडे अणगारे सिज्झइ बुज्झइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ व्याख्याप्रज्ञप्ति १,१,१९.२.गदी ता. २) ॥ २२९ ॥

सुगममेदं

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवा देवीओ सोधम्मीसाणकप्प-वासियदेवीओ च देवा देवेहि उव्वटिटद-चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २३० ॥

दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेव ॥ २३१ ॥

उत्पन्न करते हैं, कोई संयमासंयम उत्पन्न करते हैं, कोई संयम उत्पन्न करते हैं, कोई बलदेवत्व उत्पन्न करते हैं, कोई वासुदेवत्व उत्पन्न करते हैं, कोई चक्रवर्तित्व उत्पन्न करते हैं, कोई तीर्थकरत्व उत्पन्न करते हैं, कोई अन्तकृत होकर सिध्द होते हैं, बुध्द होते हैं, मुक्त होते हैं, परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं, सर्व दुखोंकेअन्तका अनुभव करते हैं ॥ २२९ ॥

यह सूत्र सुगम है

भवनवासी, वानव्यतर व ज्योतिषी देव और देवियां सौधर्म और ईशान कल्पवासी देवियां, ये देव देवपर्यायोसे उद्वर्तित और च्युत होकर कितनी गतियोंमें आते हैं ॥ २३० ॥

उक्त भवनवासी आदि देव और देवियां दो गतियोंमें आते हैं -- तिर्यचगति और मनुष्यगति ॥ २३१ ॥

छक्खंडागमे जीवटठाणं

तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा केइं छ उप्पाएंति ॥ २३२ ॥

सव्वमेदं सुगमं

मणुसेसु उववण्णल्लया मणुसा केइं दस उप्पाएंति -- केईमाभिणि-बोहियणाणमुप्पाएंति, केइं (१ मुप्पाएंति ति. केइं) सुदणाणमुप्पाएंति, केईमोहिणाणमुप्पाएंति-केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केइं केवलणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मा, मिच्छतमुप्पाएंति केइं सम्मत्तमुप्पाएंति, केइं संजमासंजममुप्पाएंति, केइं संजममुप्पाएंति णो बलदेवत्तं उप्पाएंति, णो वासुदेवत्तमुप्पाएति, णो चक्कवटिटत्तमुप्पाएंति, णो तित्थयरत्तमुप्पाएंति केइमंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्वदु:खाणमंतं परिविजाणंति (२ णिक्कंता भवणादो xxx सलागपुरिसा ण होंति कइयाइं ति.प.३.१९५-११६ शलाकापुरुषा न स्युर्भौमज्योतिष्कभावना: अनन्तरभवे तेषां भाज्या भवति निर्वृति: ततः परं विकल्पयन्ते यावद ग्रैवेयकं सुरा: शलाकापुरुषत्वेन निर्वाणगमनेन च तत्त्वार्थसार २, १७१-१७२.) ॥ २३३ ॥

उक्त भवनवासी आदि देव-देवियां तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच होकर कोई छह उत्पन्न करते हैं ॥ २३२ ॥

ये सब सूत्र सुगम हैं

उक्त भवनवासी आदि देव-देवियां मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच होकर दश उत्पन्न करते हैं --- कोई आभिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई श्रुतज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई अवधिज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई मन:पर्ययज्ञान उत्पन्न करते हैं कोई केवलज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई सम्यग्मिथ्यात्व उत्पन्न करते हैं, कोई सम्यक्त्व उत्पन्न करते हैं, कोई संयमासंयम उत्पन्न करते हैं, और कोई संयम उत्पन्न करते हैं किन्तु वे न बलदेवत्व उत्पन्न करते, न वासुदेवत्व उत्पन्न करते, न चक्रवर्तित्व उत्पन्न करते और न तीर्थकरत्व उत्पन्न करते हैं कोई अन्तकृत होकर

सिध्द होते हैं, बुध्द होते हैं, मुक्त होते हैं, परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं सर्व दुखोंकेअन्त होनेका अनुभव करते हैं ॥ २३३ ॥

चूलियाए गदियागदियाए देवाणं गदीओ गुणुप्पादणं च

दीपो यथा निर्वृतिमभ्युपेतो नैवावर्नि गच्छति नान्तरीक्षम (१ नान्तरीक्षम मु.)

दिशन्न कांचिद्विदिशन्न कांचिस्नेहक्षयात्केवलमेति शान्तिम ॥ २ ॥

जीवस्तथा निर्वृतिमभ्युपेतो नैवावर्नि गच्छति नान्तारिक्षम

दिशं न कांचिद्विदिशं न कांचित्कलेशक्षयात्केवलमेति शान्तिम (२ सौन्दरानन्द १६,२८-२९.) ॥ ३ ॥

इति स्वरुपविनाशो मोक्ष इति बौध्दैरभाणि (३ प्रदीपनिर्वाणकल्पमात्मनिर्वाणमिति च तस्य खरविषाणवत्कल्पना तैरेवाहत्य निरुपिता स.सि.१,१ रुपवेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानपंचकस्कंधनिरोधादभावो मोक्ष...तन्न त.रा.१.१. नवानामात्मगुणानां बुध्दिसुखदु:खेच्छाद्वेषप्रयत्नधर्माधर्मसंस्कारणां निर्मलोच्छैदो पवर्ग इत्युक्तं भवति ननु तस्यामवस्थायां कीदृगात्माव-शिष्यते स्वरुपैकप्रतिष्ठान:परित्यक्तो खिलेगुण:न्यायमंजरी पृ. ५०८.), तन्मतनिरासार्थ सिध्दयन्तौत्युच्यते सेस सुगमं

सोहम्मीसाण जाव सदर -- सहस्सारकप्पवासियदेवा जधा देवगदि-भंगो (४ सोहम्मादो देवा भज्जा हु सलागपुरिसणिवहेसुं णिस्सेयसगमणेसुं सव्वे वि अणंतरे जम्मे णवरि विसेसो सव्वटठसिध्दिठाणदो विच्युदा मज्जा सलागपुरिसा णिव्वाणं जंति णियमेणं ति.प.८,६८२-६८३.) ॥ २३४ ॥

सुगममेदं

जिस प्रकार दीपक जब बुझता है तब वह न तो पृथिवींकी और जाता न आकाशकी और, न किसी दिशाको जाता है, न विदिशाको, किन्तु तैलकेक्षय होनेसे केवल शान्त हो जाता है, उसी प्रकार निर्वृतिको प्राप्त जीव न पृथिवीकी और जाता न आकाशकी और, न किसी दिशाको जाता न विदिशाको, किन्तु क्लेशकेक्षय हो जानेसे केवल शान्तिको प्राप्त होता है ॥ २-३ ॥

इस प्रकार स्वरुपके विनाशका नाम हीं मोक्ष है, ऐसा बौध्दोंका कहना है इसी मतके निराकरणार्थ सूत्रमें सिध्द होते हैं ऐसा कहा गया हैं शेष सूत्रार्थ सुगम है

सौधर्म-ईशानसे लेकर शतार-सहस्त्रार तकके देवोंकी गति सामान्य देवगतिके समान है ॥ २३४॥

यह सूत्र सुगम है

छक्खंडागमे जीवटठाणं

आणदादि जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवा देवेहि चुदसमाणा कदि गदीओ आमच्छंति? ।। २३५ ।।

एक्कंहि चेव मणुसगदिमागच्छंति ।। २३६ ।।

सुगममेदं

मणुस्सेसु उववण्णल्लया मणुस्सा केइं सव्वे उप्पाएंति ।। २३७ ।।

कुदो ? विरोहाभावादो सेसं सुगमं

अणुदिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवा देवेहि चुदसमाणा कदि गदीयो आगच्छंति ? ।। २३८ ।।

एक्कंहि चेव मणुसगदिमागच्छंति ।। २३९ ।।

मणुसेसु उववण्णल्लया मणुस्सा तेसिमाभिणिबोहियणाणं सुद-णाणं णियमा अत्थि, ओहिणाणं सिया अत्थि, सिया णत्थि केइं

आनत आदिसे लगाकर नव ग्रैवेयकविमानवासी देव देवपर्यायोंसे च्युत होकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? ।।२३५।।

पर्युक्त आनतादि नव ग्रैवेयकविमानवासी देव केवल एक मनुष्यगतिमें ही आते हैं ।। २३६ ।।

यह सूत्र सुगम है

आनतादि नव ग्रैवेयकविमानवासी उपर्युक्त देव च्युत होकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले मनुष्य कोई सर्व गुण उत्पन्न करते हैं ।। २३७ ।।

क्योंकि, उनके सर्व गुण उत्पन्न करनेमें कोई विरोध नहीं है शेष सूत्रार्थ सुगम है

अनुदिशसे लेकर अपराजित विमानवासी देव देवपर्यायोंसे च्युत होकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? ।। २३८ ।।

अनुदिशादि उपर्युक्त विमानवासी देव च्युत होकर केवल एक मनुष्यगतिमें ही आते हैं ।। २३९ ।।

अनुदिशादि विमानोंके देव च्युत होकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले मनुष्योंके आभिनिबोधिक ज्ञान और श्रुतज्ञान नियमसे होता है अवधिज्ञान होता भी हैं और

मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केवलणाणमुप्पाएंति सम्मामिच्छत्तं णत्थि, सम्मत्तं णियमा अत्थि केइं संजमासंजममुप्पाएंति, संजमं णियमा उप्पाएंति केइं बलदेवत्तमुप्पाएंति, णो वासुदेवत्तमुप्पाएंति केइं चक्कवटिटत्तमुप्पाएंति, केइं तित्थयरत्तमुप्पाएंति, केइमंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्वदु:खाणमंतं परि-जाणंति (१ तीर्थेशरामचक्रित्वे निर्वाणगमनेन च च्युता: सन्तो विकल्प्यन्तेऽनुदिशानुत्तरामरा: तत्त्वार्थसार २,१७३.) ।। २४० ।।

मदि-सुदणाणं व ओहिणाणं णियमा होदि (२ होदि त्ति.मु.) त्ति ? ण एस दोसो, अणणु-गामिणो ओहिणाणस्स अणुगमाभावादो ण च तत्थ सव्वेसिमोहिणाणमणुगामी चेव अणणुगामिणो वि ओहिणाणस्स तत्थ संभवादो देवा देवभावादो, देवेहिंतो देवणि कायादो सेसं सुगमं

नहीं भी होता है कोई मन:पर्ययज्ञान उत्पन्न करते हैं, कोई केवलज्ञान उत्पन्न करते हैं उनके सम्यग्मिथ्यात्व नहीं होता, किन्तु सम्यक्त्व नियमसे होता हैं कोई संयमा-संयमको उत्पन्न करते हैं, संयमको नियमसे उत्पन्न करते हैं कोई बलदेवत्व उत्पन्न करते हैं, किन्तु वासुदेवत्व उत्पन्न नहीं करते कोई चकवर्तित्व उत्पन्न करते हैं, कोई तीर्थकरत्व उत्पन्न करते हैं, कोई अन्तकृत होकर सिध्द होते हैं, बुध्द होते हैं, मुक्त होते हैं, परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं, सर्व दुखोंके अन्त होनेका अनुभव करते हैं ।। २४० ।।

शंका--अनुदिशादि विमानोंसे च्युत होकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेंवाले जीवोंके मतिज्ञान और श्रुत ज्ञानके समान अवधिज्ञान भी नियमसे क्यों नहीं होता ?

समाधान--यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, अननुगामी अवधिज्ञानके अनुगमका अभाव है और अनुदिशादि विमानोंमें सभीका अवधिज्ञान अनुगामी ही होता है ऐसा नहीं है, क्योंकि वहां अननुगामी अवधिज्ञानका भी होना संभव है

सूत्रमें जो देवा शब्द आया है उसका अभिप्राय है देवभावसे और जो देवहिंतो शब्द आया है उसका अभिप्राय है देवनिकायसे शेष सूत्रार्थ सुगम है

सव्वटठासिध्दिविमाणवासियदेवा देवेहि चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ।। २४१ ।।

एक्कंहि चेव मणुसगदिमागच्छंति ।। २४२ ।।

मणुसेसु उववण्णल्लया मणुसा तेसिमाभिणिबोहियणाणं सुद-णाणं ओहिणाणं च णियमा अत्थि, केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केवलणाणं णियमा उप्पाएंति सम्मामिच्छत्तं णत्थि सम्मत्तं णियमा अत्थि केइं संजमासंजममुप्पाएंति संजमं णियमा उप्पाएंति केइं बलदेवत्तमुप्पाएंति, णो वासुदेवत्तमुप्पाएंति केइं चक्कवटिटत्तमुप्पाएंति, केइं तित्थयरत्तमुप्पाएंति सव्वे ते णियमा अंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्वदु:खाणमंतं परिविजाणंति ।। २४३ ।।

सर्वार्थसिध्दि विमानवासी देव देवपर्यायोंसे च्युत होकर कितनी गतियोंमें आते हैं ? ।। २४१ ।।

सर्वार्थसिध्दि विमानवासी देव च्युत होकर केवल एक मनुष्यगतिमें ही आते हैं ।। २४२ ।।

सर्वार्थसिध्दि विमानसे च्युत होकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले मनुष्योंकेआभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान नियमसे होता है कोई मन:पर्ययज्ञान उत्पन्न करते हैं केवलज्ञान वे नियमसे उत्पन्न करते हैं उनके सम्यग्मिथ्यात्व नहीं होता, किन्तु सम्यक्त्व नियमसे होता है कोई संयमासंयम उत्पन्न करते हैं, किन्तु संयम नियमसे उत्पन्न करते हैं कोई बलदेवत्व उत्पन्न करते हैं, किन्तु वासुदेवत्व उत्पन्न नहीं करते कोई चक्रवर्तित्व उत्पन्न करते हैं, कोई तीर्थकरत्व उत्पन्न करते हैं वे सब नियमसे अन्तकृत होकर सिध्द होते हैं, बुध्द होते हैं, मुक्त होते हैं, परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं और सर्व दुखोंकेअन्त होनेका अनुभव करते हैं ।। २४३ ।।

भाज्यास्तीर्थेशचक्रित्वे च्युता. सर्वार्थसिध्दित: विकल्पा रामभावेऽपि सिध्दयन्ति नियमात्पुन:

चूलियाए गदियागदियाए देवाणं गदीओ गुणुप्पादणं च

किमटठं ण तेसिं वासुदेवत्तं ? ण, तस्स मिच्छत्ताविणाभाविणिदाणपुरंगमत्तादो ओहिणाणं णियमा अत्थि त्ति कधं ? ण, तेसिं अणणुगामि-हायमाण-पडिवादिओहि-णाणाणमभावादो (१ हायमाणु सपडिवादि ता.१, हायमाणसपडिवादि ता.२ वर्धमानो हीयमान: अवस्थित: अनवस्थित: अनुगामी अननुगामी अप्रतिपाती प्रतिपातीत्येतेऽष्टौ भेदा देशावधेर्भवन्ति त.रा.१,२२.) सम्मत्तसयलकज्जादो पत्तप्पसरुवा (२ पत्तप्पसरुवादो वा ता. २) सिज्झंति अणवगयत्था-भावादो अण्णाणकणस्स (३ अण्णाणकरणस्स ता.२) वि अभावादो वा, सिध्दाणं बुध्दिअभावपदुप्पायअदुण्णयणिवारणटठं वा, अप्पाणं चेव जाणइ सिध्दो ण बज्झटठमिदि दुण्णयणिवारणटठं वा बुज्झंति त्ति उत्तं अमुत्तस्स मुत्तेहि अमुत्तेहि वा बंधो णत्थि त्ति मोक्खाभावमिच्छत्तदुण्णयणिवारणटठं मुच्चंति त्ति उत्तं असरीरस्स इंदियाणमभावादो विसयसेवा णत्थि तदो तेंसि सुहं णत्थि

शंका--सर्वार्थसिध्दि विमानसे च्युत होकर मनुष्य होनेवाले जीवोंके वासुदेवत्व क्यों नहीं होता ?
समाधान -- नहीं, क्योंकि वासुदेवत्वकी उत्पत्तिमें उससे पूर्व मिथ्यात्वके अविनाभावी निदानका होना अवश्यंभावी है

शंका -- उनके अवधिज्ञान नियमसे होता है, सो कैसे ?

समाधान -- नहीं, क्योंकि उनके अननुगामी, हीयमान व प्रतिपाती अवधिज्ञानोंका अभाव हैं

सकल कार्योका समाप्त कर लेने अर्थात कृतकृत्यसे हो जानेसे सर्वार्थ-सिध्दि विमानसे आये हुए मनुष्य आत्मस्वरुपको प्राप्त करके सिध्द होते हैं अनवगत पदार्थोके अभावसे अथवा अज्ञानके कणमात्रके भी अभावसे, अथवा सिध्दोंके बुध्दि-अभावको उत्पन्न करनेवाले दुर्नयके निवारणार्थ, अथवा सिध्द केवल आत्माको जानता है बाहयार्थको नहीं जानता, ऐसे दुर्नयके निवारणार्थ सूत्रमें बुज्झंति अर्थात बुध्द होते हैं यह पद कहा गया है अमूर्तका मूर्त अथवा अमूर्तोके साथ बन्ध नहीं होता ऐसा मोक्षके अभावसम्बन्धी मिथ्यात्वरुपी दुर्नयके निवारणार्थ मुच्चंति अर्थात मुक्त होते है यह पद कहा गया है जिसके शरीर नहीं है उसके इन्द्रियोंका भी अभाव होनेसे विषयसेवा नहीं हो सकती, अतएव मुक्त जीवोंके सुख नहीं है

दक्षिणेन्द्रास्तथा लोकपाला लौकान्तिकां: शची शक्रच्च नियमाच्युत्वा सर्वे ते यान्ति निर्वृतिम तत्त्वार्थसार २,१७४-१७५.

छक्खंडागमे जीवटठाणं

त्ति भणंतदुण्णयणिवारणटठं परिणिव्वाणयं ति उत्त संते सुहे दुक्खेण वि होदव्वं, अण्णहा सुहाणुववत्तीए इदि भणंतदुण्णयणिवारणटठं सव्वदुक्खाणमंतं परिविजाणंति ति उत्तं

एवं चूलिया समत्ता

जीवटठाणं समत्तं

ऐसा कहनेवालोंके दुर्नयके निवारणार्थ परिणिव्वाणयंति अर्थात परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं, ऐसा कहा गया है जहां सुख है, तहां दुख भी होना चाहिये, नहीं तों सुखकी उपपत्ति नहीं बन सकती ऐसा कहनेवालोंके दुर्नयके निवारणार्थ सर्व दु:खोंके अन्त होनेका अनुभव करते हैं ऐसा कहा गया है

इस प्रकार चूलिका समाप्त हुई

‘जीवस्थान समाप्त‘